आदिवासी देशज संवाद

संपादक
सावित्री बड़ाईक

आदिवासी देशज संवाद

आदिवासी देशज संवाद

संपादक
सावित्री बड़ाईक

अनुज्ञा

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2023

ISBN 978-81-19020-19-5

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032
mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 7291920186, 09350809192
www : anuugyabooks.com

आवरण : शेखर

मुद्रक
अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

ADIVASI DESHAJ SAMVAD
Collection of Interviews of Tribal Writers and Non Tribal Writers *edited by* ***Savitri Baraik***

समर्पण

उन सभी पुरखा आदिवासी आन्दोलनकारियों को
जो आदिवासी समुदायों के हक-अधिकार के लिए
सत्ता से निरंतर संघर्ष और संवाद करते रहे हैं।

प्राक्कथन

संवाद लोकतंत्र का आधार है। आदिवासी समुदाय उत्सव-धर्मिता के साथ संवाद-धर्मिता के लिए भी जाने जाते हैं। इस धरती पर सर्वाधिक जनतांत्रिक समाज है आदिवासी समाज। इस पुस्तक में आदिवासी मुद्दों पर लिखने वाले, गहन चिन्तन करने वाले आदिवासी लेखकों और गैर-आदिवासी लेखकों के साक्षात्कार को शामिल किया गया है। जो आदिवासी साहित्य के प्रतिबद्ध साहित्यकार हैं। आदिवासी साहित्य के प्रतिबद्ध साहित्यकारों, चिन्तकों के इन संवादों के माध्यम से आदिवासी साहित्य, भाषा, इतिहास, दर्शन को समझने और परिभाषित करने का प्रयास है। वर्तमान समय में संवाद का स्पेस कम होता जा रहा है। अत: संवाद की अनिवार्यता को ध्यान में रखते हुए मैंने पुस्तक का नाम रखा है– 'आदिवासी देशज संवाद'। जहाँ तक मेरी जानकारी है आदिवासी लेखकों, चिन्तकों पर साक्षात्कार के किताब की कमी है। सम्पादक वाणावतु, भीम सिंह ने 2015 में साक्षात्कार की एक किताब निकाली थी जिसका नाम है– 'साक्षात्कारों में आदिवासी'। वंदना टेटे के सम्पादन में पुरखा झारखंडी साहित्यकार और नये साक्षात्कार पुस्तक 2012 में प्रकाशित हुई है। मैं इस साक्षात्कार की किताब में उन आदिवासी एवं गैर-आदिवासी लेखकों, चिन्तकों को संवाद में शामिल कर रही हूँ जो अपने लेखन और साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधियों के जरिये पाठकों से निरन्तर संवाद करते रहे हैं।

प्रस्तुत पुस्तक की योजना बनने की जो कहानी है, उसे स्पष्ट करना चाहूँगी। मुझे 2017 में महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के एम.ए. हिन्दी के दूरस्थ पाठ्यक्रम की तीन इकाईयों को लिखने की जिम्मेदारी मिली थी, जिसके लिए मुझे कवयित्री ग्रेस कुजूर और कथाकर रोज केरकेट्टा से लम्बी बातचीत करनी पड़ी। उनकी रचना प्रक्रिया को समझने के लिए मुझे बार-बार उनसे मिलना पड़ा। उनके कार्यक्षेत्र एवं उनकी साहित्यिक, सांस्कृतिक अवदानों को पूर्णत: समझने के लिए भी यह बातचीत जरूरी थी।

कथाकार रोज केरकेट्टा 'आधी दुनिया' पत्रिका की सम्पादक भी हैं। अत: संवाद कार्यालय भी बार-बार जाना हुआ। वहाँ शिशिर टुडू से साहित्यिक और पत्रकारिता सम्बन्धी गम्भीर बातचीत होती थी। बाद में उनकी तबीयत खराब रहने लगी। परन्तु मैं इस बातचीत का दस्तावेजीकरण करना चाहती थी। अत: शिशिर दा से लगातार मिलती रही और उन्हें अपने प्रश्नों से अवगत कराती रही। उन्होंने भी अपने साक्षात्कार में कई महत्त्वपूर्ण अनछुए बिन्दुओं को उजागर किया है। शिशिर दा ने मेरे प्रश्नों का लिखित

उत्तर दिया। यह सम्भवत: उनका पहला इन्टरव्यू है। इसमें उन्होंने अपनी रचनाशीलता, जीवन अनुभव और ऐसे हुआ 'हूल' पुस्तक पर विस्तार से गम्भीरतापूर्वक विचार किया है।

प्रसिद्ध रचनाकार और चिन्तक हरिराम मीणा के साक्षात्कार के लिए मैंने प्रसिद्ध लेखक और प्रोफेसर प्रमोद मीणा से निवेदन किया कि वे उनके दीर्घ रचनात्मक जीवन पर साक्षात्कार किसी शोधार्थी को लेने के लिए कहें। मुझे यह नि:संकोच स्वीकार करना पड़ेगा कि प्रोफेसर प्रमोद मीणा ने मुझे बहुत कम समय में हरिराम मीणा का साक्षात्कार भेज दिया। मैं उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ।

पूर्वोत्तर से मुझे आदिवासी लेखक, चिन्तक की कम से कम एक साक्षात्कार की आवश्यकता थी। कवयित्री, कथाकार, सहायक प्रोफेसर जमुना बीनी तादर ने अपने व्यस्त समय से कुछ समय निकालकर प्रसिद्ध लेखक येशे दोरजे थोंग्छी का बहुउपयोगी साक्षात्कार लिया। इस साक्षात्कार से पूर्वोत्तर के लेखक भी संवाद में शामिल हो पाये हैं। जमुना बीनी तादर मुझे आन्यी बुलाती हैं, जिसका अर्थ बहन होता है। बहन जमुना के प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

प्रसिद्ध उपन्यासकार, कथाकार, कवि, चिन्तक, लेखक रणेन्द्र जी से साक्षात्कार, सहायक प्रोफेसर जनार्दन गोंड और मैंने लिया है। मैं जनार्दन गोंड के प्रति विशेष आभारी हूँ, जिन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के व्यस्ततम दिनचर्या से और बहुप्रतीक्षित उपन्यास 'पहाड़गाथा' लिखने से समय चुराकर रणेन्द्र जी का लम्बा साक्षात्कार लेने में मेरी मदद की। जिससे इस 'आदिवासी देशज संवाद' पुस्तक में अधिक चिन्तनपरक साक्षात्कार शामिल हो पाया।

मैंने ग्रेस कुजूर, रोज केरकेट्टा, शिशिर टुडू, महादेव टोप्पो, वाल्टर भेंगरा, रूपलाल बेदिया का साक्षात्कार लिया है। रणेन्द्र जी का साक्षात्कार मैंने और जनार्दन ने मिलकर लिया है। मैं उनसे पिछले दस सालों में राँची में होने वाले विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों में मिलती रही हूँ। कथाकार वाल्टर भेंगरा को 2017 में 'अयोध्या प्रसाद खत्री' सम्मान से सम्मानित किया गया। उसी समय उनसे साक्षात्कार लेने की योजना बनी थी। वॉल्टर भेंगरा ने काफी पहले साक्षात्कार दे दिया था। वे इस किताब के लिए सबसे ज्यादा उत्सुक भी हैं। कथाकार रूपलाल बेदिया ने अपने व्यस्ततम ऑफिस के कार्यों से, कथालेखन से समय निकालकर मेरे द्वारा भेजे गये प्रश्नों का रोचक ढंग से उत्तर दिया है। उनके साथ भी मेरी लगातार बातचीत होती रही। उनके प्रति मैं आभारी हूँ।

इस किताब में सबसे लम्बा साक्षात्कार कवि-लेखक, चिन्तक महादेव टोप्पो का है। साहित्य अकादमी का सदस्य बनने के बाद मैंने एक प्रश्न और भेजा गया है। उनकी चिन्तनपरक, विचारपरक लेखन से हमारी पीढ़ी के साथ अगली पीढ़ी के पाठक भी निश्चित रूप से लाभान्वित होंगे। उनके प्रति मैं विशेष आभार प्रकट करती हूँ। मैं उन्हें लगातार प्रश्न भेजती थी और लगातार बातचीत भी करती थी। उन्होंने रचनात्मक सक्रियता से समय निकालकर मेरे द्वारा भेजे गये प्रश्नों का गम्भीर उत्तर दिया है।

मैं सांस्कृतिक अगुवा, पद्मश्री रामदयाल मुण्डा का साक्षात्कार नहीं ले पायी, परन्तु मैं गिरिधारी राम गौंझू द्वारा लिये गये साक्षात्कार का मैं इस किताब में उपयोग कर रही हूँ। क्योंकि उनकी इस पुस्तक में अनुपस्थिति किताब की गरिमा को कुछ कम कर देती। साक्षात्कार की इस किताब में प्रसिद्ध आदिवासी चिन्तक, लेखक रामदयाल मुण्डा की उपस्थिति अनिवार्य है। रामदयाल मुण्डा के बेटे गुंजल इकिर मुण्डा के प्रति आभारी हूँ। मुझे उन्होंने इस साक्षात्कार को पुस्तक में उपयोग करने की सहमति दी है।

'युद्धरत आम आदमी' की प्रसिद्ध सम्पादिका, आदिवासी और दलितों पर कई किताबें देने वाली स्त्रीवादी लेखिका रमणिका गुप्ता का साक्षात्कार रजनी गुप्त, (उपसम्पादक 'कथाक्रम') ने लिया है। रजनी गुप्त ने 'आदिवासी देशज संवाद' पुस्तक में रमणिका गुप्ता का साक्षात्कार शामिल करने की अनुमति दी है। मैं रजनी गुप्त के प्रति विशेष आभार प्रकट करती हूँ।

आदिवासी देशज लेखकों, विचारकों, चिन्तकों को इस पुस्तक में लाने का मकसद यह है कि वर्तमान और आने वाली पीढ़ी समकालीन और प्रसिद्ध लेखकों के रचनाकर्म, चिन्तन और साहित्यिक अवदानों से परिचित होंगे। साथ ही लेखकों के जीवन और उनकी चुनौतियों से परिचित होंगे। पाठकों में नयी चेतना विकसित होगी और उन्हें नयी दृष्टि मिलेगी। उनमें रचने, गढ़ने, लिखने की रुचि जागृत होगी। वे कला और लेखन में भी अपनी अच्छी उपस्थिति दिखा पायेंगे। शोधार्थी, आदिवासी विद्यार्थी अपने अंदर के कवि, कथाकार, उपन्यासकार को उत्प्रेरित कर पायेंगे। ऐसी आशा करती हूँ। यह किताब निश्चय ही आदिवासी साहित्य में रुचि रखने वाले अध्येताओं, पाठकों, शोधार्थियों को रमणिका गुप्ता, रामदयाल मुण्डा, रोज केरकेट्टा, वाल्टर भेंगरा, शिशिर टुडू, ग्रेस कुजूर, गणेश नारायण देवी, हरिराम मीणा, येशे दोर्जे थोंग्छी, महादेव टोप्पो, रणेन्द्र, रूपलाल बेदिया को एक साहित्यकार, लेखक, चिन्तक, कवि के रूप में जानने, उनके समय की हलचलों-परिवर्तनों और संघर्षों-आन्दोलनों से रू-ब-रू होने के लिए आमंत्रित करेगी। साथ ही रचनाकारों से जुड़े कई रोचक प्रसंग, अछूते विषयों से परिचित होने का सुअवसर प्रदान करेगी। निश्चय ही इस पुस्तक में प्रकाशित साक्षात्कारों, संवादों के द्वारा आदिवासी क्षेत्र के साहित्यिक, सामाजिक परिवेश को उजागर करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी।

आदिवासी साहित्य के बहुपठित एवं प्रतिबद्ध रचनाकारों, चिन्तकों से 'आदिवासी देशज संवाद' के जरिए प्रस्तुत पुस्तक के द्वारा बारह रचनाकारों, कवियों, चिन्तकों और लेखकों के नजरिए से आदिवासी समाज और साहित्य को समझा जा सकता है। इस किताब के द्वारा रचनाकारों के लेखकीय व्यक्तित्व के विविध आयामों से परिचित होने का अवसर मिलेगा। पाठक इस पुस्तक के जरिए लेखकों की रचना-प्रक्रिया की बारीकियों को समझ पायेंगे ऐसी उम्मीद करती हूँ। कथाकार वाल्टर भेंगरा, रोज केरकेट्टा, रूपलाल बेदिया की कहानी विषयक विचार, किस्सागोई को समझने में पाठक सक्षम हो पायेंगे। रोज केरकेट्टा के साक्षात्कार से आदिवासी कहानियों, स्त्री-जीवन के संघर्षों, चुनौतियों

से पाठक रू-ब-रू हो पायेंगे। ग्रेस कुजूर की कविताओं की विशेषताओं, बिम्बों, सौन्दर्य बोध से अवगत होंगे। रणेन्द्र जी के लम्बे साक्षात्कार से आदिवासी दर्शन, इतिहास और आदिवासी समुदायों की चुनौतियों पर समझ जागृत होगी। महादेव टोप्पो के साक्षात्कार से आदिवासी कविता, इतिहास, विविध कला एवं संस्कृति के विविध आयामों से पाठक जुड़ पायेंगे। येशे दोर्जे थोंग्छी के द्वारा पूर्वोत्तर के साहित्य और संस्कृति को समझने में मदद मिलेगी। लेखक, चिन्तक हरिराम मीणा के द्वारा आदिवासी दर्शन, आदिवासी दुनिया को देखने की नयी दृष्टि मिलेगी। भाषाशास्त्री, जनबुद्धिजीवी गणेश नारायण देवी के साक्षात्कार को अंतिम समय में शामिल कर पाई हूँ जो पाठकों, शोधार्थियों के लिए नि:संदेह उपयोगी होगा। 'आदिवासी देशज संवाद' से गुजरते हुए आप कथाकारों, कवियों, लेखकों, चिन्तकों के द्वारा आदिवासी साहित्य, संस्कृति, दर्शन के साथ आदिवासियों के समक्ष आयी चुनौतियों को भी बेहतर ढंग से जान पायेंगे, ऐसी आशा करती हूँ। ये रचनाकार ऐसे हैं, जो निरन्तर अपनी पीढ़ी के रचनाकारों के साथ संवाद करते रहे हैं और एक दूसरे का सम्मान भी करते रहे हैं। हमारे जैसे बाद की पीढ़ी के लेखकों के साथ भी निरन्तर आत्मीयता के साथ संवाद कर रहे हैं। संवाद, साक्षात्कार के माध्यम से पाठकों के समक्ष कुछ निष्कर्ष साफ तौर पर सामने आयेंगे, जिसका आकलन करने में वर्तमान और भावी पीढ़ी के पाठक समर्थ हो पाएँगे। मुझे पूरा विश्वास है कि 'आदिवासी देशज संवाद' को पाठक एवं शोधार्थी हृदय से स्वीकार करेंगे।

जोहार!

9 जून, 2023
बिरसा मुण्डा शहादत दिवस

–सावित्री बड़ाईक
राँची

अनुक्रम

प्राक्कथन			7
1.	बदलाव के लिए प्रतिबद्ध है आदिवासी साहित्य	*–रमणिका गुप्ता*	13
2.	झारखंडी संस्कृति के तत्त्व छऊ, पइका और झूमर में देखे जा सकते हैं	*–पद्मश्री रामदयाल मुण्डा*	28
3.	नये सौन्दर्यशास्त्र की जरूरत नहीं, जरूरत है सौन्दर्यशास्त्र की परिधि के विस्तार की	*–रोज केरकेट्टा*	34
4.	आमूल-चूल परिवर्तन के लिए तो व्यापक विमर्श व जनआन्दोलन आवश्यक है	*–शिशिर टुडू*	51
5.	सिर्फ समस्याओं को उजागर नहीं करना चाहिए बल्कि समाज की समस्याओं के समाधान के रास्ते भी सुझाना लेखक का दायित्व है	*–वाल्टर भेंगरा 'तरुण'*	61
6.	जिन रचनाओं में अपनी मिट्टी की सोंधी गंध हो, उसकी जड़ें बहुत गहरी होती हैं	*–ग्रेस कुजूर*	75
7.	विकास को आदिवासी की आँख से देखिए	*–गणेश नारायण देवी*	93
8.	आदिवासी साहित्य कोई भी रचे बशर्ते उसको आधिकारिक अनुभव हो आदिवासी समाज का	*–हरिराम मीणा*	107
9.	उपन्यास लिखने के बाद जो सुकून और राहत का एहसास होता है वह किसी वस्तु से प्राप्त नहीं होगा	*–वाई. डी. थोंग्छी*	119
10.	लोगों ने कहा था आप क्या आदिवासी, आदिवासी, झारखंड, झारखंड लिखते हो?	*–महादेव टोप्पो*	130
11.	भविष्य में आर्थिक विकास/प्रगति की वैकल्पिक अवधारणा इसी आदिवासी जीवन दृष्टि से विकसित होने वाली है	*–रणेन्द्र*	174
12.	जब मन में कहानी की एक मुकम्मल तस्वीर प्रकट हो जाती है तब मैं उसे कागज पर उतारने बैठता हूँ, –एक रचनाकार को हमेशा सजग रहना पड़ता है	*–रूपलाल बेदिया*	195
बातचीत, संवाद करने वालों की सूची			211

जन्म : 22 अप्रैल 1930, निधन : 26 मार्च 2019

रमणिका गुप्ता

समकालीन हिन्दी साहित्य की महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर, पुस्तकों की लेखिका, कवयित्री, सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यकर्ता एवं जानी-मानी श्रमिक नेता प्रख्यात रचनाकार रमणिका गुप्ता आज किसी परिचय की मोहताज नहीं। आदिवासी, दबे-कुचले दलितों व स्त्रियों के बुनियादी हकों के लिए वे सालों से अनवरत एक अन्तहीन संघर्ष छेड़े हुए हैं। श्रमिक आन्दोलन की अगुवाई करने वाली रमणिका जी वाम लोकतांत्रिक संगठनों से भी जुड़ी हुई हैं। विधान सभा एवं विधान परिषद में दलितों का प्रतिनिधित्व करते हुए उन्होंने वंचित आदिवासियों व दबे-कुचले वर्ग की बेहतरी के लिए अपने जीवन की सारी रचनात्मक ऊर्जा झोंक दी। जरूरतमंद वर्ग में जागरूकता फैलाते हुए वे पूरी तरह जीवंतता, जीवटता व धैर्य के साथ एक बड़े सामाजिक लक्ष्य से जुड़ी हुई हैं। चालीस वर्षों से झारखंड के छोटानागपुर क्षेत्र में आदिवासियों, दलितों व स्त्रियों के खंडित व अधूरे सपनों को सच करने का जुनून लिए, वे मिशनरी उत्साह व उम्मीद से सतत सार्थक काम करती रहती हैं। देश भर के दलित आदिवासी, बौद्धिकों व सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए वे वाकई हमारे समय की बड़ी प्रेरणास्रोत बनी हुई हैं। अपनी नेतृत्व क्षमता, सांगठनिक सूझबूझ एवं 'युद्धरत आम आदमी' जैसी सोद्देश्य पत्रिका की कुशल सम्पादक के रूप में, उन्होंने एक बड़ी लकीर खींची है। उनके द्वारा 'संस्थापित, संचालित : रमणिका फाउंडेशन' हाशिए पर जीने वाले व उत्पीड़ित-शोषित आदिवासियों के सशक्तिकरण द्वारा समाज में बदलाव लाकर बराबरी का दर्जा दिलाने के लिए प्रतिबद्ध एक ऐसा संगठन